सर्वहारा दृष्टिकोण

सोशलिस्ट यूनिटी सेन्टर ऑफ इण्डिया (कम्युनिस्ट) का मुखपत्र (पाक्षिक)

वर्ष-28 अंक-10 22 मई से 5 जून, 2013 मुख्य संपादक - कॉमरेड कृष्ण चक्रवर्ती मूल्य : 2 रुपये

पश्चिम बंगाल में चिट फण्ड घोटाले के खिलाफ प्रदर्शनकारियों पर पुलिस द्वारा बर्बरता के साथ लाठीचार्ज

कोलकाता : स्कूलों में पास-फेल प्रणाली तुरंत पुनः बहाल करने, यौन शिक्षा रद्द करने, चारों तरफ महिलाओं पर हो रहे अत्याचारों की रोकथाम के लिए उपयुक्त बंदोबस्त करने, चिट फण्ड में नुकसान के शिकार हुए लाखों लोगों को उचित मुआवजा देने और इस घोटाले में मददगार सहअपराधियों को गिरफ्तार करने और सख्त सजा देने की 5 सूत्रीय माँगों को लेकर एआईडीएसओ, एआईडीवाईओ और एआईएमएसएस के आह्वान पर 14 मई को पाँच हजार से अधिक छात्र-नौजवान-महिलाओं ने कानून अमान्य के लिए अनुशासित ढंग से कॉलेज स्क्वायर से निकाला गया। रासमणि अवेन्यू जाने के रास्ते में पुलिस ने बड़ा बाजार के पास उन्हें घेर लिया और अंधाधुंध लाठियाँ बरसाई। घायल कार्यकर्ता सड़क पर गिर जाने पर भी पुलिस उन्हें पीटती रही। पुलिस के इस आचरण से आसपास के लोग उत्तेजित हो गये। पुलिस ने कानून की अवज्ञा करने वालों को गिरफ्तार करने के लिए गाड़ियों का कोई इन्तजाम नहीं कर रखा था। लाठीचार्ज कर उन्हें तितरबितर कर देना चाहा। इन तीनों संगठनों और एसयूसीआई(सी) की पश्चिम बंगाल राज्य कमेटियों ने पिछली सीपीआई(एम) सरकार की तर्ज पर तृणमूल सरकार द्वारा जन आन्दोलन पर किये गये इस सुनियोजित हमले की तीव्र निन्दा की है। इन्हीं माँगों पर इसी दिन सिलीगुड़ी में भी कानून अमान्य के लिए छात्र-नौजवान-महिलाओं के अनुशासित प्रदर्शन पर पुलिस ने अंधाधुंध लाठियाँ बरसाई। इस दिन ए.आई.डी.एस.ओ. की ओर से 16 मई को राज्यव्यापी छात्र हड़ताल का आह्वान किया गया है।

मार्क्सवाद असाधारण रूप से एक शक्तिशाली मशाल है जो प्रकृति, समाज व जीवन को संचालित करने वाले छिपे नियमों को भी देखने में हमारी मदद करती है

एसयूसीआई(सी) के 65वें स्थापना दिवस पर 27 अप्रैल को दिल्ली में आयोजित जनसभा में पार्टी के पोलिट ब्यूरो सदस्य कॉमरेड कृष्ण चक्रवर्ती का भाषण

अध्यक्ष जी, मंच पर उपस्थित नेतागण व साथियो,

इस वर्ष पार्टी का स्थापना दिवस एक बहुत ही गंभीर स्थिति में मनाया जा रहा है जहाँ जीवन के सभी क्षेत्रों–आर्थिक, राजनैतिक, सामाजिक, शैक्षणिक और सबसे बढ़ कर जीवन के सांस्कृतिक क्षेत्र को संकट ने चारों ओर से घेर लिया है। 16 दिसम्बर 2012 की दिल्ली की सामूहिक बलात्कार की विभत्स घटना के बाद यदि कोई गिनती करे तो सिर्फ दिल्ली में ही लगभग 50-60 बलात्कार की घटनाएं हो चुकी हैं। एक पांच साल की बच्ची का बलात्कार किया गया, उसके गुप्तांगों में मोमबत्ती और तेल की शीशी डाल दी गई और साक्ष्य मिटाने के लिए उसे मारने का प्रयास किया गया। आज भी अखबारों में खबर है कि दिल्ली के बदरपुर क्षेत्र में एक सार्वजनिक शौचालय में 6 साल की एक बच्ची के साथ बलात्कार किया गया। ऐसा एक भी दिन नहीं गुजरता है जब महिलाओं और बच्चों पर यौन हमले न होते हों। सारे देश में यही हाल है। ऐसे में हमलों के खिलाफ कौन खड़ा होगा? ऐसे नैतिक और सांस्कृतिक पतन से देश को कौन बचाएगा? कॉमरेड शिवदास घोष ने अपने एक भाषण के दौरान कहा था कि एक अधनंगा, गरीब और भूखा राष्ट्र भी अन्याय और दमन के खिलाफ संघर्ष में डटकर खड़ा हो सकता है यदि उसकी नीति-नैतिकता और संस्कृति का स्तर ऊँचा रहे। लोग जो उच्च नीति-नैतिकता से विहीन हैं वे पतन की अतल गहराइयों में डूबने को बाध्य हैं। हमारा देश भी ऐसे ही दौर से गुजर रहा है।

आर्थिक संकट की व्याख्या करने के लिए किसी लम्बी चर्चा की जरूरत नहीं है जिसने देशवासियों को बदहाली और कंगाली के कगार पर धकेल दिया है। यह संकट हर रोज और हर घण्टे उजागर होता जा रहा है। यदि आप टेलिवीजन खोलें और लोकसभा या राज्यसभा में या इस मामले में राज्यों की विधान सभाओं में नेताओं का आचरण देखें तो आपका सर शर्म से झुक जाएगा, यह बहुत ही भद्दा नजारा होता है। आप देखेंगे कि भाजपा और कांग्रेस दोनों ही एक दूसरे पर घोटालों, धांधलियों और भ्रष्टाचार के आरोप लगा रही हैं। संसद या राज्य विधान सभाओं में चुने हुए प्रतिनिधि गली के लफंगों जैसा आचरण करते हैं। आजकल ऐसा मंत्री मुश्किल से मिलता है तो भ्रष्ट न हो। लेकिन लोगों का तर्जुबा क्या है? उनका तर्जुबा है कि ये तमाम बड़ी पार्टियाँ जन-विरोधी हैं। एकाधिकारी और कॉरपोरेट घरानों की उनकी लगातार ताबेदारी ने आम लोगों के प्रति उनके व्यवहार को पूर्णतः ऐसे एक पैटर्न पर ढाल दिया है जिसे एक शब्द में जन-विरोधी ही कहा जा सकता है। अपने सहज बोध के जरिए ही लोग इसे समझते हैं। मनमोहन सिंह आम आदमी की बात करते हैं लेकिन आम आदमी के नाम पर असल में वे पूँजीपति वर्ग की ही सेवा करते हैं जबकि आम आदमी भूखा मर रहा है।

सभा को संबोधित करते हुए कॉ. कृष्ण चक्रवर्ती

सबसे भयावह है अधःपतन जो नीति-नैतिकता और संस्कृति के क्षेत्र में हो रहा है जो सर्वव्याप्त हो गया है। चुनावों में तीन एम (मनी पावर, मसल पॉवर, मीडिया पॉवर) सब कुछ तय करते हैं और लोगों के मत का कोई मोल नहीं है। चाहे वह भाजपा हो, कांगेस हो, बीएसपी या एस पी हो। इस मामले में चाहे कोई भी संसदीय पार्टी हो, सभी में अपराधिक रिकार्ड वाले सांसदों या विधायकों का बोलबाला है। चुनावों में वे इस तरह धांधली को अंजाम देते हैं कि आम वोटर इसे बिल्कुल समझ ही

(शेष पृष्ठ 2 पर)

बड़ी पार्टियों द्वारा एकाधिकारी और कॉरपोरेट घरानों की लगातार ताबेदारी ने आम लोगों के प्रति उनके व्यवहार को पूर्णतः 'जनविरोधी' पैटर्न पर ढाल दिया है

(पृष्ठ 1 का शेष)

नहीं पाता है। इन में से कुछेक के खिलाफ बलात्कार और हत्या के आरोप हैं। पुलिस खुद अपराधों में लिप्त है और अपराधियों के साथ सांठ-गांठ किये रहती है। हाल ही में आपने टीवी पर देखा होगा कि एक पांच साल की बच्ची के साथ बलात्कार के खिलाफ प्रतिवाद कर रही एक लड़की को एक एसीपी ने कई बार थप्पड़ मारे जिससे उसका कान गम्भीर रूप से जख्मी हो गया। इस मामले में, सुप्रीम कोर्ट ने तल्ख टिप्पणी की और केन्द्र सरकार से जवाब तलब किया। प्रशासन या पुलिस पर या जो उनके नेता होने का दावा करते हैं उन पर भी लोग भरोसा नहीं कर सकते हैं। आज स्थिति ऐसी ही है। ऐसी स्थिति में लोगों को क्या करना चाहिए? ये कुछ मूलभूत सवाल हैं जिनसे हम जूझ रहे हैं। क्या हम इसे होने देंगे या हम इसका प्रतिरोध करेंगे? केवल लोग ही इसे रोक सकते हैं लेकिन हम चाहे कितने ही आन्दोलन करें या प्रयास करें, यदि हम कारणों को नहीं जानें तो हम कुछ भी हासिल नहीं कर सकेंगे। हमारे सामने उदाहरण मौजूद हैं। लोग इन बुराइयों के खिलाफ लड़ना चाहते हैं और संघर्ष करना चाहते हैं। अन्ना हजारे आन्दोलन जिसने देश भर से लाखों लोगों को अपने आगोश में ले लिया था और जनआन्दोलन के दबाव से केन्द्रीय सरकार को 'सैंस ऑफ दी हाऊस' प्रस्ताव पास करने के लिए मजबूर कर दिया था, अंततः नाकाम हो गया। जन लोकपाल बिल पास नहीं हो सका। अब उस आन्दोलन का अंजाम क्या हुआ? केजरीवाल जिन्होंने शुरूआत में राजनीति को आन्दोलन से दूर रखने की बात कही थी उन्होंने आगामी संसदीय चुनावों के मद्देनजर खुद ही एक राजनीति पार्टी गठित कर ली। इसलिए हमें न केवल कारणों को जानना है बल्कि आन्दोलन के चरित्र, स्वरूप, नीति, संस्कृति और नैतिक आधार के बारे में भी स्पष्ट होना चाहिए जिसे समस्याओं के खिलाफ विकसित करने की जरूरत है। आन्दोलनों की कोई कमी नहीं रही है। 16 दिसम्बर 2012 की घटना के बाद महिलाओं, छात्रों और नौजवानों सहित हजारों लोगों ने पानी की बौछारों, लाठी चार्ज और आंसू गैस का मुकाबला करते हुए राष्ट्रपति भवन के सामने और इण्डिया गेट पर प्रदर्शन किया। अपने पूरे राजनीतिक जीवन में मैंने दिल्ली में इतनी बड़ी अनुशासित और शांतिपूर्ण प्रतिवाद रैली नहीं देखी जो मैं समझता हूँ ऐतिहासिक थी। जो अनुशासन और संस्कृति उन्होंने दिखाई इसमें हमारे आन्दोलनों का भविष्य और उम्मीद नीहित है। किसी विशेष संगठन ने उन्हें नहीं जुटाया था। अपराधियों के खिलाफ कार्रवाई की मांग करते हुए वे खुद ब खुद आए थे। यदि लोग इस प्रकार संगठित हो जाते हैं तो अपराधी जो हमेशा पूरे समाज के मुकाबले बहुत ही कम होते हैं उन पर आसानी से काबू पाया जा सकता है। लेकिन लोगों के संगठित न होने की वजह से सिर्फ चन्द अपराधी ही तबाही मचा देते हैं। लेकिन यदि लोग अपने अपने इलाकों में संगठित हो जायें तो अपराधियों के साथ-साथ पुलिस पर भी प्रभावकारी नियन्त्रण कायम किया जा सकता है। विजय चौक और इण्डिया गेट पर जमा हुए हजारों प्रदर्शनकारी केवल इतनी सी मांग कर रहे थे कि मुजरिमों को उदाहरणमूलक सजा दी जाए और ऐसे कदम उठाए जाएं कि इस प्रकार की घटनाओं की पुनरावृत्ति न हो। प्रदर्शनकारियों के प्रति सहानूभूति दिखाने और उनकी मांगों को मानने की बजाय सरकार और पुलिस ने भयंकर दमन का सहारा लिया। लेकिन प्रदर्शनकारियों द्वारा कोई हिंसा नहीं की गई, आगजनी नहीं की गई या एक पत्थर तक नहीं फेंका गया। तितर-बितर कर दिए जाने के बाद प्रदर्शनकारी बार-बार इकट्ठा होते रहे उनकी संख्या या जज्बे में कोई कमी नहीं आई। यह स्वयं दिखाता है कि यदि ऐसी एक शक्ति को सही दिशा देने में सक्षम एक पार्टी उन्हें संगठित करे तो वे निश्चित ही ऐसे अपराधों पर प्रभावकारी रोक लगा सकते हैं। सिर्फ इतना ही नहीं, यदि ऐसी घटनाओं के पीछे असल कारणों को उन्हें समझाया जाए तो एक पूरी तरह नए किस्म के आन्दोलन के विकसित होने की संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता जो अंततः इस शोषणमूलक पूँजीवादी व्यवस्था की जड़ों पर ही प्रहार कर सकता है। कॉमरेडों को भी इन कारणों को समझना है और लोगों को भी समझाना है।

आप जानते हैं कि पूँजीवादी व्यवस्था हमेशा से नहीं थी। इस व्यवस्था से पहले सामंतवादी व्यवस्था हुआ करती थी यहाँ बादशाह, सुलतान, राजा, महाराजा अपने-अपने क्षेत्रों पर शासन किया करते थे जिसकी जगह आज पूँजीवादी राजसत्ता ने ले ली है। दुनिया के तमाम देशों में चाहे वह इंग्लैण्ड, जर्मनी, फ्रांस, अमेरिका हो या इटली, सभी जगह अपनी ह्रासोन्मुखी सामंती व्यवस्थाओं को परास्त करने के बाद एक नई सामाजिक व्यवस्था के रूप में पूँजीवाद उभरा था। उन दिनों पूँजीवाद ने प्रगतिशील भूमिका निभाई थी। इसने शिक्षा को धर्म के चंगुल से आजाद कराया और चर्च से मुक्त किया, इसने धर्मनिरपेक्ष और जनवादी परिवेश तैयार किया, इसने वैज्ञानिक ज्ञान, टैक्नोलोजी और औद्योगिकीकरण को प्रोत्साहित किया जिसने उन दिनों समाज की प्रगति को जबरदस्त मदद पहुँचाई। उन दिनों पूँजीवाद ने नीति-नैतिकता के उच्च मूल्यबोधों को जन्म दिया जिन्हें हम 'बुर्जुआ मानवतावाद' कहते हैं। सामंती सोच यह थी कि इन्सान को भगवान ने बनाया है और बराबर पैदा किया है जबकि रूसो और वॉल्टेयर जैसे बुर्जुआ मानवतावादी दार्शनिकों के अनुसार इन्सान को किसी ने समान बनाया नहीं है बल्कि इन्सान पैदा ही समान हुआ है लेकिन बंधनों में जकड़ा हुआ है, जिन्हें तोड़ने की जरूरत है। इन नए उच्च मूल्यबोधों के साथ पूँजीवाद ने व्यक्ति को सामंती बन्धनों से मुक्त किया जिसके चलते समाज की प्रगति हुई। लम्बे समय तक इसने वस्तुगत तथा भावगत दोनों तरह के उत्पादन में एक प्रगतिशील भूमिका निभाई। लेकिन प्रकृति, समाज या जीवन में कुछ भी स्थाई नहीं है; कोई भी चीज जो अस्तित्व में आती है उसका अस्तित्व से जाना निश्चित है। अपनी प्रगतिशील भूमिका निभाने के बाद एक अवस्था आती है जहाँ इसका विकास रुक जाता है तथा धीरे-धीरे इसका ह्रास शुरू हो जाता है लेकिन इसके ह्रास की प्रक्रिया के शुरू होने के साथ यह अपने गर्भ में नई चीज के भ्रूण को जन्म देती है जो इसके अस्तित्व से चले जाने के बाद इसकी जगह ले लेती है। एक व्यवस्था के रूप में पूँजीवाद के बारे में भी यही सत्य है। मार्क्स की शिक्षाओं की और भी व्याख्या करते हुए और समृद्ध करते हुए लेनिन ने दिखाया था कि 19वीं सदी के अंत और 20वीं सदी की शुरूआत के दौरान पूँजीवाद साम्राज्यवादी स्तर में पहुँचने के बाद अपने विकास की उच्चतम अवस्था में पहुँच गया है जिसके बाद इसका पतन या ह्रास शुरू हो गया है। ऐसी एक अवस्था में पूँजीवाद मरणासन्न और प्रतिक्रियावादी हो गया है और समाज के विकास में बाधा बन गया है। इसलिए पूँजीवाद को उखाड़ फेंकने और बदल देने की जरूरत है। तदनुसार लेनिन के नेतृत्व में बॉल्शेविकों ने केरेंस्की के नेतृत्वाधीन बुर्जुआ स्टेट को उखाड़ फेंका जो मरणासन्न हो गई थी। एक व्यवस्था जो मरणासन्न अवस्था में नहीं पहुँची है, यानी एक व्यवस्था जिसकी अभी भी कुछ प्रगतिशील भूमिका बची है, उसे उखाड़ा नहीं जा सकता है, चाहे कोई कितना ही प्रयास करे। लेनिन ने दुनिया के सामने इसे कर दिखाया। बाद में माओ त्से-तुंग, हो चि मिन, किम इल सुंग और फिदेल कास्त्रो ने अपने अपने देशों में क्रान्तियाँ सम्पन्न की और दुनिया को दिखाया कि पूँजीवाद मरणासन्न हो गया है और मानवजाति की प्रगति में एक बाधा बन गया है। उन्होंने दिखाया कि एक समय बुर्जुआ वर्ग द्वारा लाए गए मानवतावाद के प्रगतिशील मूल्यबोध पूर्णतः निःशेषित और ह्रासोन्मुख हो गए हैं और जब तक इन मूल्यबोधों से समाज संचालित होता रहेगा, ये समाज और समाजिक परिवेश को प्रदूषित करते रहेंगे। सर्वहारा विश्व दृष्टिकोण और संस्कृति पर आधारित नए उच्च और उदात्त मूल्यबोधों की जरूरत है जिन्हें मार्क्स ने दिखाया, लेनिन ने विकसित किया और हमारे देश में जिन्हें कॉमरेड शिवदास घोष ने और भी विस्तृत और समृद्ध किया। इसका मायने क्या है? सामंती व्यवस्था के दौरान व्यक्ति की स्वतंत्रता नहीं थी; बुर्जुआ वर्ग ने व्यक्ति को मुक्त कराया और उत्पादन के साधनों पर उसके मालिकाने के अधिकार को स्थापित किया। इसका परिणाम हुआ समाज की प्रगति और उत्पादन की प्रकृति अधिक संगठित और सामूहिक हो गई जबकि उत्पादन के साधनों पर मालिकाने की प्रकृति व्यक्तिगत रह गई। तब से लेकर अन्याय और भी तीव्र तथा स्पष्ट हो गया। मार्क्स ने दिखाया कि इस संकट या द्वन्द्व का समाधान उत्पादन के सामाजिक साधनों पर व्यक्तिगत मालिकाने की जगह सामाजिक मालिकाना स्थापित करके ही किया जा सकता है जो उत्पादक शक्तियों के सामाजिक चरित्र से मेल खाता है। मार्क्स ने दिखाया कि यही एकमात्र तरीका है जिसके जरिए इस अन्याय का खात्मा किया जा सकता है। उत्पादन के तमाम साधनों को समाज के सामाजिक मालिकाने के तहत लाया जाना चाहिए। वे जो उत्पादन करते हैं उत्पादन के साधनों के मालिक होने चाहिएं और मजदूर ही मालिक होने चाहिएं। इसे ही उत्पादन के साधनों पर सामाजिक मालिकाना कहा जाता है। यही एकमात्र समाधान है। यह नई अति विकसित संस्कृति, खुद के लिए नहीं बल्कि पूरे समाज के लिए सामूहिक काम पर आधारित यह नया मूल्यबोध मानव समाज के विकास के एम खास स्तर यानी पूँजीवादी व्यवस्था में सर्वहारा के आविर्भाव के साथ विकसित हुआ है। एक विशेष मजदूर को अगर देखा जाए तो वह इस संस्कृति को प्रतिबिम्बित नहीं करता है क्योंकि उसने पूँजीवादी समाज में जन्म लिया है जिसके प्रभाव के तहत वह व्यक्तिवाद का शिकार बन जाता है। सर्वहारा की ऐतिहासिहक स्थिति को ध्यान में रखते हुए मार्क्स ने इसे उच्चतम संस्कृति की संज्ञा दी जो व्यक्तिवाद के उन्मूलन का मार्ग प्रशस्त करेगी। आज व्यक्तिवाद खतरनाक

(शेष पृष्ठ 4 पर)

देश भर में मनाया गया मई दिवस

उत्तर प्रदेश की आंगनबाड़ी एवं आशा कर्मचारी संयुक्त आन्दोलन की राह पर

लखनऊ(उ.प्र.) : 1 मई को अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर दिवस के दिन जब सारी दुनियाँ के मजदूर अपने अधिकारों के लिए संघर्ष कर रहे हैं। उन्ही मजदूरों के साथ एकता कायम करते हुए उत्तर प्रदेश के कोने-कोने से आयी हजारों आशा कर्मियों, आंगनबाड़ी कार्यकर्त्रियों एवं सहायिकाओं ने मई माह की दोपहर की चिलचिलाती धूप एवं लू की परवाह किये बगैर सरकार के खिलाफ संघर्ष का ऐलान कर दिया। बसों एवं ट्रेनों में रात भर सफर कर आशा कर्मी, आंगनबाड़ी कर्मचारी प्रात: लखनऊ के चारबाग रेलवे स्टेशन पहुँची। वहाँ से ऑल इण्डिया यूनाइटेड ट्रेड यूनियन सेन्टर (एआईयूटीयूसी)से सम्बद्ध दो संगठनों उ.प्र. ग्रामीण स्वास्थ्य कार्यकर्त्री आशा यूनियन और आंगनबाड़ी कार्यकर्त्री एवं सहायिका वेलफेयर एसोसिएशन उ.प्र. के संयुक्त नेतृत्व में आशा कर्मचारी, आंगनबाड़ी कार्यकर्त्रियाँ एवं सहायिकाएँ विधान सभा के लिए निकल पड़ी। इनकी कुल संख्या तीन हजार से भी अधिक थी। 'अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर दिवस जिन्दाबाद', 'दुनिया के मजदूरो एक हो', 'एआईयूटीयूसी जिन्दाबाद', 'आशा कर्मियों-आंगनबाड़ी कार्यकर्त्रियों एवं सहायिकाओं को सरकारी कर्मचारी घोषित करो', '15वें भारतीय श्रम सम्मेलन के आधार पर तय न्यूनतम वेतनमान देना सुनिश्चित करो', 'मई दिवस को सार्वजनिक अवकाश घोषित करो, आदि नारे लगाते हुए रैली विधान सभा के लिए मार्च करते हुए आगे बढ़ी। लगभग 3 किमी दूर स्थित विधान सभा के सामने धरना स्थल पर पहुँच कर रैली एक सभा में बदल गई।

सभा का संचालन एआईयूटीयूसी के राज्य कार्यालय सचिव कॉ. वालेन्द्र कटियार ने किया। एआईयूटीयूसी की अखिल भारतीय कमेटी के सचिव मण्डल सदस्य कॉ. अचिन्त्य सिन्हा ने मुख्य वक्ता के रूप में सभा को सम्बोधित करते हुये कहा कि आज मई दिवस आन्दोलन के शहीदों को याद करते हुए हम वादा करते है, शपथ लेते हैं कि जब तक हमें जीत हासिल नहीं होती तब तक हमारा संघर्ष जारी रहेगा। आज इस मैदान में आंगनबाड़ी एवं आशा कर्मचारी यह वादा आपसे कर रही हैं। मजदूर कभी भी अपने वादे से पीछे नही हटते हैं। बेहतर होगा कि मा. मुलायम सिंह जी, मा. अखिलेश यादव जी अपने प्रदेश के मजदूरों को पहचानें। उन्होंने आगे कहा कि जनता द्वारा चुने गए विधायक सरकारी खजाने से हर महीने 50 हजार, 60 हजार रुपये वेतन लेते हैं लेकिन क्या उन्हें यह पता नही है कि उन्हीं के गाँव की आशा बहनें, आंगनबाड़ी कार्यकर्त्री कितना वेतन पाती हैं? उन्होंने विधायकों को कहा कि अगर उनमें जरा भी नैतिकता है, शर्म है तो वे तब तक वेतन लेने से इनकार कर दें जब तब कि आशा कर्मियों, आंगनबाड़ी कार्यकर्त्रियों एवं सहायिकाओं को वेतन नहीं मिलता। अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए उन्होंने कहा कि आंगनबाड़ी कर्मचारी, आशा कर्मी अपनी तनख्वाह बढ़ाने के लिए तो लड़ेंगी ही, साथ ही साथ वे लड़ेंगी उन करोड़ों कुपोषित बच्चों एवं बीमार महिलाओं के लिए भी जो इन दोनों योजनाओं से लाभान्वित होंगे। आज लखनऊ की धरती पर आशा कर्मी आयी हैं, आंगनबाड़ी कर्मचारी आयी हैं। हम उम्मीद कर रहे हैं कि अब वह दिन दूर नहीं जब गाँव-गाँव से कुपोषित और बीमार बच्चे एवं महिलाएं आकर लखनऊ की सड़कों को पाट देंगी। आज से इस संघर्ष की शुरूआत हो चुकी है।

सभा को एआईयूटीयूसी के प्रदेश अध्यक्ष कॉ. राजबली, सचिव कॉ. विजय पाल सिंह, आंगनबाड़ी कार्यकर्त्री एवं सहायिका वेलफेयर एसोसिएशन की प्रदेश अध्यक्षा कॉ लता शर्मा, महामंत्री शशिबाला, उ.प्र. ग्रामीण स्वास्थ्य कार्यकर्त्री आशा यूनियन के अध्यक्ष कॉ वालेन्द्र कटियार, उपाध्यक्षा ममता अवस्थी, आंगनबाड़ी इम्प्लाइज फेडरेशन आफ इण्डिया (एईएफआई) की राष्ट्रीय अध्यक्ष कॉ. कमलेश चहल ने भी सम्बोधित किया। सभा के अन्त में आंगनबाड़ी कार्यकर्त्री एवं सहायिका वेलफेयर एसोसिएशन, उ.प्र. की ओर से एक 11 सूत्रीय मांग पत्र तथा उ.प्र. ग्रामीण स्वास्थ्य कार्यकर्त्री आशा यूनियन की ओर से एक 8 सूत्रीय मांग पत्र धरना स्थल पर उपस्थित मजिस्ट्रेट के माध्यम से मुख्यमंत्री को भेजे गये।

बोकारो (झारखण्ड): बोकारो इस्पात सेण्ट्रल वर्कर्स यूनियन और सेण्टर ऑफ स्टील वर्कर्स की ओर से बोकारो स्टील प्लाण्ट के सीइजेड गेट के पास 1 मई को सभा करके मई दिवस कार्यक्रम आयोजित किया गया। सभा की अध्यक्षता ब.इ.स.व. यूनियन के कार्यकारी अध्यक्ष कॉ. आर एस शर्मा ने की। सुबह सात बजे शहीद वेदी पर माल्यर्पण व पुष्पांजलि कार्यक्रम शुरू हुआ तथा सभा का समापन यूनियन के महामंत्री कॉ. मोहन चौधरी के वक्तव्य के साथ हुआ।

नागपुर (महाराष्ट्र): काम का दिन 8 घण्टे हो, इस मांग को लेकर लड़ाई में अमेरिका के शिकागो शहर के शहीदों की याद में पूरी दुनिया में '1 मई वैश्विक मजदूर दिवस' के रूप में मनाया जाता है। लेकिन भारत में आजादी के 65 साल बाद भी सभी जगह कमोबेश 12 से 16 घण्टे काम करके भी न्यूनतम वेतन तक अधिकतर मजदूरों को नहीं दिया जाता है। फिर भी केन्द्र और राज्य सरकार का लेबर विभाग मालिकों की दलाली करने में व्यस्त हैं। यही हाल नागपुर के हिंगणा व बुटीबोरी क्षेत्र का है।

काम के घण्टे 8 हों, सभी मजदूरों के लिए 15 हजार रुपए महीना न्यूनतम वेतन लागू करो, भ्रष्टाचार बंद करने हेतु अमर्यादित निजी संपत्ति पर रोक लगाओ आदि मांगों के साथ मई दिवस के नारे भी रैली में लगाए गए। रैली आई सी चौक से निकलकर वी आई पी कम्पनी, महेन्द्रा एण्ड महेन्द्रा कम्पनी होते हुए एमआईडीसी कार्यालय पहुँचकर सभा में रूपांतरित हो गई। सभा में विभिन्न नेताओं व प्रतिनिधियों ने भाषण दिया। इनमें एआईयूटीयूसी के जिला सचिव कॉ. माधव भोण्डे ने कहा कि मजदूरों ने अपनी मांग पूर्ति के साथ मजदूर वर्गीय राजनीति में सक्रिय भाग लेकर क्रान्तिकारी माहौल बना क्रान्ति द्वारा पूँजीवादी व्यवस्था को उखाड़ फेंककर अपने हाथों में सत्ता लेनी होगी।

सूरत

नागपुर

राँची में बलात्कार के खिलाफ महिलाओं ने प्रदर्शन किया

विगत 24 अप्रैल को राँची के डोरेंडा इलाके में 5 वर्ष की एक मासूम बच्ची के साथ सामूहिक बलात्कार और कत्ल की घटना के खिलाफ 26 अप्रैल को छात्र संगठन ऑल इण्डिया डीएसओ की राँची जिला कमेटी और अखिल भारतीय महिला सांस्कृतिक संगठन ने संयुक्त विरोध प्रदर्शन किया और यह जुलूस अल्बर्ट एक्का चौक से शुरू हो कर मेन रोड होते हुए शहीद पार्क पर जाकर समाप्त हो गया। इससे पहले 25 अप्रैल को पीड़िता के मृत शरीर के साथ सैकड़ों मौहल्ले वालों को लेकर इन जनसंगठनों के कार्यकर्ताओं ने रास्ता जाम कर बलात्कारियों को तुरन्त पकड़ कर उदाहरणमूलक कड़ी सजा देने की माँग की। लगातार बढ़ते विरोध के कारण दबाव में पुलिस-प्रशासन को जल्द कार्रवाई करनी पड़ी और सप्ताह भर में ही दोषियों को गिरफ्तार कर लिया गया।

बलात्कार और कत्ल की घटना के खिलाफ यह विरोध प्रदर्शन एआईएमएसएस की रांची जिला सचिव कॉमरेड संध्या पाण्डे, ऑल इण्डिया डीएसओ की राँची जिला सचिव कॉ. वन्हिशिखा समाजपति के नेतृत्व में किया गया। जुलूस में अंजलि, रीतु, रिंकी, लिली, छोटी, कल्पना, विमला सहित लगभग 50-60 छात्राएं व महिलाएं शामिल थीं।

कॉमरेड कृष्ण चक्रवर्ती का भाषण

मार्क्सवाद-लेनिनवाद-शिवदास घोष चिन्तनधारा की शक्तिशाली मशाल राह रोशन करेगी

(पृष्ठ 2 का शेष)

रूप से दूषित हो गया है। यह लोगों को अधिकाधिक आत्मकेन्द्रित बना रहा है। जहाँ उन्हें अपने परिवार के सदस्यों तक से कोई सरोकार नहीं है। सभी पूँजीवादी देशों में कमोबेश अब स्थिति ऐसी ही है। आज जीवन के बुर्जुआ मूल्यबोध हमें आगे नहीं ले जा सकते हैं बल्कि हमें पीछे खींचेंगे, समस्याओं के समाधान की बजाय ये समस्याएं पैदा कर रहे हैं। सामूहिकवाद या उत्पादन के साधनों पर सामूहिक मालिकाने पर आधारित मूल्यबोध सर्वहारा के आविर्भाव के साथ आए हैं जिसकी व्याख्या केवल मार्क्स ने ही की थी और इसे दिखाया था। हमारे देश में हमारे रोजमर्रा के जीवन में इसके लागू होने की सही-सही व्याख्या कॉमरेड शिवदास घोष द्वारा हमारे देश की ठोस परिस्थितियों के मद्देनजर की गई है। जनता का जो नेतृत्व करेंगे, यदि वे खुद व्यक्तिवाद का शिकार बन जाएं तो वे नेतृत्व नहीं कर सकेंगे। यही वजह है कि न केवल कांग्रेस और भाजपा के नेतागण बल्कि तमाम अन्य बुर्जुआ पार्टियों और सीपीआई, सीपीएम जैसी पेटी-बुर्जुआ पार्टियों और अन्य ग्रुपों के नेतागण भी व्यक्तिवाद से मुक्त नहीं हैं। वे लोगों को कहाँ ले जाएंगे? उनकी पहली प्राथमिकता अपने खुद के लिए है। लोग दूसरे नम्बर पर आते हैं। एक पार्टी जो सामूहिकवाद पर आधारित इन मूल्यों के आधार पर गठित हुई है और जिसके नेताओं ने इन मूल्यबोधों को अपने रोजमर्रा के संघर्षों में अपनाया है, वही केवल जनता को सही नेतृत्व प्रदान कर सकती है। कॉमरेड शिवदास घोष ने इन मूल्यबाधों के आधार पर एसयूसीआई (सी) की आधारशिला रखी थी। इसी में निहित है एक कम्युनिस्ट बनने का असल संघर्ष, इन उच्च मूल्यबोधों और रूचि-संस्कृति और नीति-नैतिकता के उच्च मान को हासिल करने का संघर्ष। वरना कोई भी मार्क्सवादी साहित्य से मार्क्सवाद-लेनिनवाद के बारे में कुछ बातें सीख सकता है। यदि हमारे द्वारा यह संघर्ष निरन्तर नहीं चलाया गया तो हमारी पार्टी भी पतित हो जाएगी। हम भी गिर जाएंगे कि कॉमरेड शिवदास घोष ने पार्टी में एक समय यह संघर्ष संचालित किया था और अब यह संघर्ष संचालित करने की कोई जरूरत नहीं है ऐसी सोच हमें कहाँ ले जाएगी। यदि हम नीति-नैतिकता और संस्कृति के उच्च मान को हासिल करने का संघर्ष छोड़ दें तो हमारा गिरना और पतित होना निश्चित है जैसा कि महान लेनिन की पार्टी या माओ की पार्टी के साथ हुआ। यदि आप कारणों की पड़ताल करें तो आप पांएगे कि ख्रुश्चेव काल के दौरान और बाद में व्यक्तिवाद के पनपने के लिए सभी सहायक परिस्थितियाँ पैदा की गई जिसके चलते अंततः संशोधनवाद का आविर्भाव हुआ जिसके माध्यम से बुर्जुआ विचरों और संस्कृति की पार्टी में घुसपैठ हुई और इसे अन्दर से कमजोर कर दिया। हम पहले ही बुर्जुआ व्यवस्था में काम कर रहे हैं और निरन्तर इसकी ह्रासोन्मुख संस्कृति के प्रभाव में हैं। यदि हम सचेत रूप से व्यक्तिवाद के खिलाफ संघर्ष नहीं छेड़ते हैं चाहे हमारे प्रियजनों के प्रति हो या हमारे बच्चों या किसी और के प्रति हो अपनी कमजोरियों के खिलाफ संघर्ष नहीं छेड़ते हैं तो हमारा गिरना तय है। हमारा उनके प्रति प्यार होगा लेकिन कमजोरी नहीं। प्यार और कमजोरी एक चीज नहीं हैं। इस मामले में हमें कोई बचा नहीं सकेगा। जिस दिन हम संघर्ष छोड़ देंगे, हम गिर जाएंगे। इसलिए कॉमरेड्स जो सर्वहारा संस्कृति के उच्च स्तर को हासिल करने के लिए व्यक्तिवाद के खिलाफ समझौताहीन संघर्ष करेंगे वे निश्चित ही आगे बढ़ेंगे और यदि यह संस्कृति जिसे हमारी पार्टी में कॉमरेड घोष द्वारा विकसित किया गया आम जनता में नहीं फैलाई जाती है तो हम अपनी सरजमीन पर क्रान्ति को अंजाम नहीं दे सकेंगे। यह राहत की बात है कि हमारे कॉमरेडों की विकसित संस्कृति को देख कर सभी जगह लोग हमारी पार्टी की तरफ आकर्षित हो रहे हैं। सभी राज्यों में हमारी पार्टी विस्तारित हो रही है जबकि तमाम दूसरी पार्टियाँ टूट रही हैं। इसका कारण है कि उन पार्टियों में व्यक्तिवाद इतना गहरा पैठ गया है कि हर व्यक्तिगत नेता का अपना खुद का ग्रुप है और ग्रुपों के बीच आपसी झगड़ों के चलते टूटन हो रही है और अलग पार्टियाँ बन रही हैं ऐसी घटना हमारी पार्टी के लिए अब तक पूरी तरह पराई है। यदि हम अपनी पार्टी में इस प्रक्रिया को बरकरार और सुरक्षित रखने में सक्षम हुए जिसे कॉमरेड घोष ने बिल्कुल शुरूआत से ही इतने मनायोग से विकसित किया है तो हमारी पार्टी कभी नहीं गिरेगी। इन तमाम पहलुओं से लोगों को अवगत कराने की हमें जरूरत है।

एक महत्वपूर्ण चीज जिसे समझा जाना चाहिए वह है कि यह आन्दोलन जो 16 दिसम्बर 2012 की जघन्य सामूहिक बलात्कार और क्रूरता की घटना के बाद हुआ बहुत ही प्रशंसनीय था क्योंकि यह बहुत अनुशासित, ईमानदाराना और उद्देश्य को समर्पित था। पुलिस द्वारा किए गए भयंकर दमन के बावजूद प्रदर्शनकारियों को झुकाया नहीं जा सका। लेकिन साथ ही साथ इस आन्दोलन में एक जबरदस्त कमी थी जिसे क्रान्तिकारी नजरअंदाज नहीं कर सकते हैं। इसने खुद को राजनीति से दूर रखा जो असल में बुर्जुआ वर्ग का एक षड्यन्त्र है। जो छात्रों, मजदूरों, कमचारियों, अध्यापकों को राजनीति से खुद को जोड़ने से हतोत्साहित करता है। 'कोई राजनीति नहीं' का नारा खुद में बुर्जुआ वर्ग की राजनीति है क्योंकि लोगों के क्रान्तिकारी राजनीति में खुद को शामिल करने से पूँजीपति वर्ग अत्यधिक भयभीत है। यदि छात्र, नौजवान, मजदूर, किसान, शिक्षक एवं अन्य शोषित जनता राजनीति न करें तो राजनीति करेंगे कौन? तब तो राजनीति करेंगे पूँजीपति वर्ग खुद, उसके दलाल और तमाम समाज-विरोधी तत्व। हमें समझना चाहिए कि एक वर्ग-विभाजित समाज में दो तरह की राजनीति है–पूँजीपति वर्ग की राजनीति और मजदूर वर्ग की राजनीति–जो एक दूसरे से बिलकुल विपरीत हैं। पूँजीपति वर्ग की राजनीति है जो शोषण और दमन की रक्षा और बचाव करती है जो आज नैतिक और नीतिगत रूप से पतित हो गई है। जबकि मजदूर वर्ग की राजनीति है शोषण और दमन की व्यवस्था को उखाड़ फेंकने और उच्च नीति-नैतिकता और संस्कृति पर आधारित एक नई सभ्यता को पैदा करने की राजनीति। इस स्थिति में एक क्रान्तिकारी पार्टी को मजदूर वर्ग की रानीति की अपरिहार्य जरूरत को लोगों को समझाना होगा। यदि वे वास्तव में ही इस शोषणमूलक व्यवस्था से मुक्ति चाहते हैं। चूँकि बुर्जुआ और पेटी-बुर्जुआ पार्टियों की जन-विरोधी और पतित राजनीति के खिलाफ लोगों में नफरत पैदा हो गई है इसलिए 'कोई राजनीति नहीं' का नारा कुछ लोगों को भ्रमित कर सकता है। लेकिन यदि 'कोई राजनीति नहीं' के नारे का मुकाबला नहीं किया गया और इस शैतानी नारे से जनता प्रभावित हो जाती है तो फासीवाद के विकास के लिए सहायक जमीन तैयार हो जाना निश्चित है। लोगों को असल क्रान्तिकारी पार्टी को जानने की जरूरत है जो शोषण और अन्याय के खिलाफ उनकी लड़ाई में उन्हें नेतृत्व प्रदान करने में सक्षम है।

आज की खतरनाक और जटिल परिस्थिति में जब संकट ने जीवन के सभी क्षेत्रों को घेर लिया है, जब आम लोगों को बदहाली और कंगाली में, ऐसी एक व्यवस्था में धकेल दिया गया है जिसने अपना मानवीय चेहरा गवां दिया है। जब मानवीय मूल मर रहे हैं तब लोगों को संगठित करने के काम के लायक हमें अपने आपको सिद्ध करना है। इसके लिए हमें पहले खुद को मजदूर वर्ग की राजनीति, संस्कृति और नीति-नैतिकता से लैस करना है। हमें बस्तियों और मोहल्लों में लोगों के बीच काम करना चाहिए ताकि समाज के सभी तबकों, विशेषकर युवाओं को शामिल कराते हुए जन आन्दोलन के हथियार के रूप में जनसंघर्ष कमेटियों को रूपाकार दिया जा सके। यदि हम ऐसा करने में सक्षम हो जाएं और हजारों हजार लोगों को शामिल करा सकें, तो अपराधी सिर्फ डर के मारे ही भाग जाएंगे। जन आन्दोलन के जोर से सरकार और पुलिस को आन्दोलन के बारे में अपना नजरिया बदलने के लिए भी मजबूर किया जा सकता है। आप जानते हैं कि आन्दोलन के दबाव के चलते सरकार को महिलाओं पर होने वाले अपराधों की रोकथाम के उपायों पर कानूनों में परिवर्तन सुझाने के लिए जस्टिस वर्मा कमेटी नियुक्त करने के लिए बाध्य होना पड़ा था। जो भी हो, जन-आन्दोलन की कमजोरी या उसके कमजोर पड़ते जाने की वजह से ही पुलिस और अर्धसैनिक बलों को ऐसे कानूनों के दायरे में लाने की कमेटी की इस महत्वपूर्ण सिफारिश को सरकार द्वारा स्वीकार नहीं किया गया। सरकार द्वारा कारण बताया गया कि यह सुरक्षा बलों के मनोबल को गिरा देगा और सुरक्षा बल नाराज हो जाएंगे। ऐसे मामलों में महिलाओं के प्रति

(शेष पृष्ठ 5 पर)

पार्टी स्थापना दिवस के अवसर पर जनसभा

दुर्ग (छ.ग.) : 28 अप्रैल 2013 को एस.यू.सी.आई.(कम्युनिस्ट) जिला दुर्ग छ.ग. द्वारा पार्टी स्थापना दिवस पूरे सम्मान के साथ मनाया गया। मुख्य वक्ता कॉमरेड धुर्जटी दास, उड़िसा राज्य कमेटी सचिव ने सभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि आज समाज में चारों तरफ अराजकता व्याप्त है। आम आदमी आजादी के छः दशक बीत जाने के बाद भी मंहगाई, बेरोजगारी, नशाखोरी, शिक्षा, स्वास्थ्य, लड़कियों व महिलाओं पर यौन शोषण, बलात्कार, सांस्कृतिक पतन की समस्याओं से जूझ रहा है जिनको हल करने में सभी सरकारें नाकाम रही हैं। इन सभी के पीछे जो कारण है, वह है पूँजीवादी तंत्र जिसका मुख्य उद्देश्य है किसी भी प्रकार से शोषण कर अत्यधिक मुनाफा कमाना। आज हमारा समाज दो वर्गों में विभाजित है। एक ओर देश में 90 प्रतिशत आम मजदूर जनता है और दूसरी ओर चन्द मुट्ठी भर पूँजीपति जो पूरे देश का शोषण कर रहे हैं। उन्होंने आम जनता से आह्वान किया कि इन तमाम समस्याओं से निजात पाने के लिए सचेत, संगठित जन आंदोलन, एक सही वैज्ञानिक विचारधारा के आधार पर निर्मित करने के लिए एकजुट होकर आगे आयें।

इस सभा में कॉमरेड महेन्द्र साहू ने भी अपने विचार व्यक्त किये। सभा की अध्यक्षता कॉमरेड विश्जीत हारोडे ने की। संचालन कॉमरेड आत्मा राम साहू द्वारा किया गया।

कॉमरेड कृष्णा चक्रवर्ती का भाषण

(पृष्ठ 4 का शेष)

पुलिस का जो रवैया रहता है उसके बारे में आप भली-भांति जानते हैं। अनगिनत घटनाएं हैं जो दिल्ली में और दिल्ली के बाहर ऐसे मामलों में पुलिस और अर्धसैनिक बलों की भूमिका के बारे में बहुत कुछ बयां कर देती हैं। उत्तर-पूर्व में, जम्मू-कश्मीर में और अन्य जगहों पर पुलिस अधिकारियों द्वारा बर्बरता किए जाने की कई मिसालें मौजूद हैं। यदि सुरक्षा बलों या पुलिस को ऐसे कानूनों के तहत नहीं लाया जाता है तो सरकार अपराधियों को क्या संदेश दे रही है। असल में यह उन्हें प्रोत्साहन का इशारा दे रही है। इसलिए मैं यहाँ दोहराता हूँ कि जन-आन्दोलन के जरिए डाले गए जबरदस्त दबाव के द्वारा ही केवल सरकार को लोगों की न्यायसंगत मांगों को मानने के लिए मजबूर किया जा सकेगा।

लोग असंतोष और गुस्से से भरे हुए हैं तथा महिलाओं पर अपराधों, भ्रष्टाचार, पुलिस ज्यादतियों और केन्द्र तथा राज्य सरकारों की उदासीनता के खिलाफ आन्दोलनों में शामिल होने के लिए आतुर हैं। यही वजह है कि वे हजारों की संख्या में आन्दोलनों में शामिल हो रहे हैं। फिर भी, आन्दोलन की दिशा के बारे में साफ समझदारी उनकी नहीं है। वे आन्दोलन के राजनीतिकरण के भी खिलाफ हैं। चाहे जितनी भी कठिनाई हो जनता की राजनीति से खुद को लैस करने की जरूरत के बारे में उन्हें हमें समझाना है और उन्हें दिशा देनी है। एकमात्र जो रास्ता खुला है वह है उनका राजनीतिकरण करना, जन-कमेटियों में उनको संगठित करना जो उनके खुद के संघर्ष के हथियार के तौर पर काम करेंगी। केरल में सभी जिलों में हम स्त्री सुरक्षा कमेटियाँ स्थापित कर रहे हैं। लोग अपना भरपूर समर्थन दे रहे हैं। लोग अन्याय और दमन के खिलाफ संघर्ष छेड़ने के लिए सही दिशा आौर मार्गदर्शन चाह रहे हैं। हमें उन्हें संगठित होने में मदद देनी चाहिए।

यहाँ लोगों को एक महत्वपूर्ण बात समझनी चाहिए कि ऐसे एक समय जब एक देशव्यापी आन्दोलन को विकसित करना निहायत जरूरी है जिसे हमारे जैसे एक विशाल देश में कम से कम आज कोई एक अकेली पार्टी गठित नहीं कर सकती है, तब देश की वाम और जनवादी ताकतों का संयुक्त संघर्ष समय की मांग है। लेकिन दुर्भाग्य से, सीपीआई, सीपीएम, इत्यादि जैसी बड़ी वाम पार्टियाँ ऐसा एक आन्दोलन निर्मित करने की पहलकदमी लेने की बजाए तथाकथित तीसरा विकल्प बनाने में व्यस्त हैं जिसके लिए वे एआईएडीएम के, टीडीपी, बीजेडी, आरजेडी जैसी क्षेत्रीय पार्टियों या यहाँ तक कि जातिवादी पार्टी बीएसपी के साथ हाथ मिला रही हैं, इनका एकमात्र उद्देश्य है कुछ चुनावी लाभ बटोरना।

दूसरा एक खतरनाक रुझान जो शोषित जनता की एकता को गड़बड़ा रहा है वह है संघ परिवार द्वारा फैलाए जा रहे हिन्दू सम्प्रदायवाद का खतरनाक तरीके से बढ़ना। अब वे मिस्टर नरेन्द्र मोदी को प्रधानमंत्री के रूप में पेश करने का प्रयास कर रहे हैं, जिसके शासनकाल में गुजरात में जघन्य किस्म के साम्प्रदायिक दंगे हुए थे जिनमें कम से कम 2000 मुसलमान मारे गए। जनवादी आन्दोलन की बात तो छोड़ दीजिए, देश का जनवादी परिवेश पूरी तरह तबाह हो जाएगा यदि संघ परिवार का यह मनहूस मनसूबा कामयाब हो जाता है। मैं आश्वस्त हूँ कि देश की जनवादी और प्रगतिशील ताकतें संघ परिवार के इस प्रयास को शिकस्त देंगी।

एसयूसीआई(सी) के 65वें स्थापना दिवस पर जनसभा

सभा को सम्बोधित करते हुए कॉ. प्रताप सामल

ग्वालियर (म.प्र.): 28 अप्रैल को एसयूसीआई(सी) के 65वें स्थापना दिवस पर ग्वालियर में मध्य प्रदेश राज्य स्तरीय कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम की शुरूआत कॉ. शिवदास घोष के चित्र पर माल्यार्पण कर उन पर रचित गीत से हुई।

सभा को मुख्य वक्ता के रूप में पार्टी के दिल्ली राज्य सांगठनिक कमेटी के सचिव कॉ. प्रताप सामल के द्वारा सम्बोधित किया गया। उन्होंने बताया कि किस तरह से आम जनता के विकास की बात कहकर मध्य प्रदेश सरकार व केन्द्र सरकार आम जनता के साथ धोखा कर रही है तथा सभी जीवनोपयोगी वस्तुओं को मिट्टी के दाम पर पूँजीपतियों को दे रही है तथा आम जनता से मनमाने दाम वसूले जा रहे हैं। अंत में कॉ. प्रताप सामल ने जनसभा में एसयूसीआई(सी) पार्टी को मजबूत बनाने व जनआन्दोलन तेज करने का आह्वान किया। सभा को एआईएमसएस की ओर से कॉ. रचना अग्रवाल, पार्टी की गुना जिला इकाई के इंचार्ज कॉ. प्रदीप आर.बी., एवं एआईयूटीयूसी की ओर से कॉ. लोकेश शर्मा ने भी सम्बोधित किया। अंत में इण्टरनेशनल गान के साथ सभा का समापन हुआ।

पार्टी स्थापना दिवस के अवसर पर यदि हम जन कमेटियों को रूपाकार देने में सक्षम होते हैं तो पूँजीवाद-विरोधी समाजवादी क्रान्ति के लिए आन्दोलन को मजबूत करने की दिशा में यह एक बड़ा कदम होगा। यदि जन कमेटियाँ सही दिशा में संघर्ष संचालित करती हैं तो लोग खुद ब खुद समझ जाएंगे कि तमाम संकट का मूल कारण भारतीय पूँजीवादी व्यवस्था है जिसे उखाड़ फेंकने की जरूरत है और इसकी जगह मजदूरों का अपना राज्य यानी समाजवादी राज्य कायम करना है। वे यह भी समझ जाएंगे कि पूँजीवादी राज्य सामाजिक प्रगति के लिए बाधा बन गया है और इसे मजदूर वर्ग के सचेत और संगठित संघर्ष के जरिए उखाड़ फेंकना है। पूँजीपति वर्ग लोगों के बीच भ्रम फैलाने की जी तोड़ प्रयास कर रहा है; यह विभिन्न तरीकों से लोगों की एकता को तोड़ने का प्रयास कर रहा है। यह सैक्स, हिंसा, शराब, नशीले पदार्थों और अश्लीलता को फैलाकर तथा बढ़ावा देकर नौजवानों की नैतिक रीढ़ को तोड़ रहा है। जन कमेटियों द्वारा संचालित संघर्ष में लगे लोग जन आन्दोलन का सशक्त विपरीत प्रवाह पैदा करके पूँजीपति वर्ग के ऐसे कदमों का पर्दाफाश करेंगे और उन्हें परास्त कर देंगे। ऐसे तमाम संघर्षों में हम मार्क्सवाद-लेनिनवाद की सशक्त मशाल द्वारा दिशा-निर्देशित होंगे जिसे भारतीय संदर्भ में कॉमरेड शिवदास घोष द्वारा ठोस रूप दिया गया है।

कॉमरेड्स याद रखिए कि डर मानवजाति का सबसे बड़ा शत्रु है। यह इन्सान की तमाम शक्ति को छीन लेता है सभी कालों के शासक शोषक वर्ग इसे बहुत अच्छी तरह जानते हैं। क्रूर स्टेट पॉवर का इस्तेमाल करते हुए उन्होंने लोगों में डर पैदा किया है और अभी भी कर रहे हैं। लेकिन आप लोग कब डरते हैं? जब भविष्य अंधकार में डूबा हो। हम अंधेरे से डरते हैं क्योंकि हम नहीं जानते कि सामने क्या है—सांप या शेर, कटीली-झाड़ियाँ या गड्डे। इसलिए हम आगे बढ़ने से डरते हैं। लेकिन यदि हमारे हाथ में एक सशक्त मशाल रहे जो सामने रोशनी फैला देती है तो हम देख सकते हैं कि वहाँ सामने क्या है और हम अपना रास्ता खोज लेते हैं और दिलेरी से आगे बढ़ते हैं। ज्ञान की रोशनी से तुलना की गई। है और यह ठीक भी है। मार्क्सवाद असाधारण रूप से एक शक्तिशाली मशाल है जो प्रकृति, समाज और जीवन को संचालित करने वाले छिपे नियमों को भी देखने में हमारी मदद करती है। हमें इसमें पारंगत होना है और रास्ता खोज निकालना है। मेरा दृढ़ विश्वास है कि पार्टी स्थापना दिवस पर कॉमरेड्स मार्क्सवाद-लेनिनवाद-शिवदास घोष चिन्तनधारा में पारंगत होने के संघर्ष को और भी तेज करेंगे और आगे बढ़ेंगे। सभी को क्रान्तिकारी अभिनन्दन देते हुए अपना भाषण समाप्त करता हूँ।

एसयूसीआई (सी) जिन्दाबाद

पूँजीवाद-विरोधी समाजवादी क्रान्ति जिन्दाबाद

कॉमरेड शिवदास घोष लाल सलाम

जन समस्याओं को लेकर रैली

दुर्ग (छ.ग.) : 29 अप्रैल को एस.यू.सी.आई. (कम्युनिस्ट) के बैनर तले ईरानी डेरा रोड केला बाड़ी दुर्ग में व्याप्त मोहल्ले की समस्याओं को लेकर रैली व प्रदर्शन कर नगर निगम दुर्ग में महापौर के नाम ज्ञापन सौंपा गया। ज्ञात हो कि मोहल्ले में करीब चार-पाँच महीनों से नाली की सफाई नहीं होने के कारण नाली कचरे से भरी हुई थी जिससे बदबू उठ रही थी और लोग बीमार हो रहे थे, मच्छरों का प्रकोप भी बहुत बढ़ गया था। रैली का नेतृत्व नीतू साहू द्वारा किया गया। इस रैली प्रदर्शन में करीब 25 महिलाएं शामिल हुई। तत्पश्चात नगर निगम द्वारा दो दिन बाद ही नालियों की सफाई करवा दी गई।

फीस बढ़ोतरी के खिलाफ धरना

गुजरात में एमएस यूनिवर्सिटी में 150 रुपये महीना फीस बढ़ोतरी के खिलाफ ऑल इण्डिया डीएसओ द्वारा गत दिनों धरना दिया गया।

स्कूलों में पास-फेल प्रणाली पुनः बहाल करने की मांग को लेकर देश भर में ए.आई.डी.एस.ओ. द्वारा प्रदर्शन

दिल्ली

बैंगलौर

नई दिल्ली : ऑल इण्डिया डेमोक्रेटिक स्टूडेन्ट्स ऑर्गेनाइजेशन (ए.आई.डी.एस.ओ.) की ऑल इण्डिया कमेटी के आह्वान पर 9 मई को पूरे देश भर में मनाए गए अखिल भारतीय मांग दिवस के अवसर पर संगठन की दिल्ली राज्य कमेटी ने आज जंतर-मंतर पर प्रदर्शन किया। प्रदर्शन में विभिन्न स्कूल-कॉलेजों से छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। वे स्कूलों में पास-फेल प्रणाली पुनः बहाल करने, पर्याप्त संख्या में शिक्षकों की नियुक्ति करने व स्कूलों में आधारभूत सुविधाएं मुहैय्या कराने की मांग कर रहे थे। प्रदर्शन स्थल पर आयोजित सभा को विभिन्न छात्र नेताओं के साथ ही एस.यू.सी.आई. (कम्युनिस्ट) के राज्य सचिव कॉ. प्रताप सामल, ए.आई.डी.एस.ओ. के दिल्ली राज्य अध्यक्ष कॉ. भास्करानन्द, राज्य सचिव प्रशान्त कुमार व राज्य कमेटी सदस्य मो. आसिफ ने संबोधित किया। सभा का संचालन ए.आई.डी.एस.ओ. के दिल्ली राज्य कमेटी सदस्य कॉ. राहुल सरकार ने किया।

वक्ताओं ने कहा कि हाल ही में सरकार ने 'शिक्षा-अधिकार अधिनियम-2009' पूरे देश भर में लागू किया। इसके तहत 8वीं कक्षा तक विद्यार्थियों को बेरोकटोक पास करने का प्रावधान लाया गया। शुरूआत से ही ए.आई.डी.एस.ओ. की ओर से इस नीति का पूरे देश भर में विरोध किया गया और अभी भी जारी है। बेरोकटोक पास करने की नीति के चलते छात्र-छात्राओं में शिक्षा के प्रति गम्भीरता खत्म होती जा रही है और प्राइमरी शिक्षा की नींव कमजोर होती जा रही है। इस तथ्य को कई राज्यों के शिक्षा मंत्रियों ने भी स्वीकारा है। इस नीति के दुष्परिणाम और जनता के दबाव के चलते हाल ही में संसदीय स्थायी समिति (पार्लियामेण्टरी स्टैण्डिंग कमेटी) ने सरकार को इस नीति को वापस लेने का सुझाव दिया है।

उन्होंने कहा कि स्कूलों में स्टाफ व आधारभूत सुविधाओं का भारी अभाव बना हुआ है; डेस्क, पुस्तकालयों में पुस्तकें, शौचालय एवं अन्य मूलभूत आवश्यकताएं भी पूरी तरह मुहैया नहीं हैं। शिक्षकों की कमी बनी हुई है। एक-एक अध्यापक को कई बार 100 से भी ज्यादा छात्रों को पढ़ाना पड़ता है। ऐसे में यह एक विचारणीय विषय है कि एक के बाद एक इस तरह की नीतियों को लागू करने के पीछे क्या उद्देश्य है? क्या सरकार वास्तव में शिक्षा देने की मंशा रखती है? दरअसल सरकार की इन नीतियों के चलते सरकारी स्कूलों की शिक्षा का स्तर दिन-प्रतिदिन गिरता जा रहा है तथा आम जनता अपने बच्चों को महंगे और निजी स्कूलों में पढ़ाने को मजबूर है। परिणामस्वरूप शिक्षा के निजीकरण-व्यापारीकरण को बढ़ावा मिल रहा है और शिक्षा आम आदमी की पहुँच से दूर हो रही है।

उन्होंने छात्र समुदाय व तमाम शिक्षा प्रेमी जनता से अपील की कि बेरोकटोक पास करने की नीति व शिक्षा के गिरते स्तर के खिलाफ एक जोरदार आन्दोलन गठित करने के लिए आगे आएँ। सभा के अंत में प्रधानमंत्री को एक ज्ञापन भी सौंपा गया।

भोपाल (म.प्र.): 9 मई को छात्र संगठन

एआईडीएसओ की ओर से पूरे देश में मांग दिवस के रूप में मनाया गया जिसमें मुख्य रूप से शिक्षा के अधिकार के तहत कक्षा 1 से 8 तक खत्म की गई पास-फेल प्रणाली को पुनः लागू करने, फीस वृद्धि, शिक्षा के निजीकरण-व्यापारीकरण, सेमेस्टर सिस्टम बन्द करने व शिक्षण संस्थानों में महिलाओं की सुरक्षा सुनिश्चित करने की मांग उठाई गई। ऑल इण्डिया डीएसओ द्वारा यहाँ आयोजित विरोध प्रदर्शन को सम्बोधित करते हुए छात्र संगठन के जिला प्रभारी कॉ. विनोद लोगरिया ने कहा कि सरकारों की शिक्षा के निजीकरण-व्यापारीकरण की नीतियों के चलते शिक्षा एक बिकाऊ माल में तब्दील की जा रही है। साथ ही साथ पास-फेल प्रणाली खत्म करने और सेमेस्टर सिस्टम लागू करने के कारण शिक्षा के मूल उद्देश्य को भी खत्म किया जा रहा है। टी.वी. के माध्यम से अश्लीलता परोसने से समाज में महिला पर अत्याचारों व अपराधों में दिन ब दिन बढ़ोतरी हो रही है। उन्होंने इसकी रोकथाम करने की मांग की। कक्षा 1 से 8वीं तक पास फेल प्रणाली पुनर्विचार करने की हाल ही में संसदीय समिति द्वारा की गई सिफारिश को लागू करने पर सभी वक्ताओं ने जोर दिया।

पाठ्य पुस्तकों की आपूर्ति की मांग को लेकर छात्र प्रदर्शन

उड़ीसा में सभी स्कूली छात्रों को पाठ्य पुस्तकों की आपूर्ति करने, पाठ्य पुस्तकों की कालाबाजारी रोकने, शिक्षा का निजीकरण-व्यापारीकरण बंद करने की माँग को लेकर 29 अप्रैल को भद्रक में जिला कलैक्ट्रेट पर छात्र संगठन ऑल इण्डिया डीएसओ की भद्रक जिला कमेटी के तत्वावधान में छात्रों ने प्रदर्शन किया। गौरतलब है कि नया सत्र 2 अप्रैल से शुरू हो गया है लेकिन सरकार ने अभी तक भी पाठ्य पुस्तकें छात्रों को उपलब्ध नहीं कराई हैं। प्रदर्शन का नेतृत्व एआईडीएसओ के उड़ीसा राज्य काउन्सिल सचिवमण्डल सदस्य कॉ. सिद्धार्थ रथ ने किया। अन्य नेताओं में राज्य कमेटी सदस्य कॉ. अजमल हुसैन, भद्रक कॉलेज के छात्र नेता कॉ. गोविंद मल्लिक, राजकिशोर मल्लिक, चंदन दास, श्रीकांत राउत ने भी छात्रों को संबोधित किया। अंत में जिला कलैक्टर की मार्फत एक ज्ञापन जनशिक्षा मंत्री के नाम दिया गया।

रांची

अगरतला

मुजफ्फरपुर

पटना में मनाया गया डॉ. हैनीमैन का 258वाँ जन्म दिवस

पटना (बिहार): होम्योपैथी के जन्मदाता डॉ. सैमुएल क्रिश्चियन फ्रेड्रिक हैनीमैन का 258वाँ जन्म दिवस विश्वविद्यालय के सिनेट हॉल में मेडिकल सर्विस सेण्टर के तत्वावधान में सम्मानपूर्वक मनाया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन मुजफ्फरपुर होम्योपैथिक मेडिकल कॉलेज के प्राचार्य डॉ. ए.के. शर्मा तथा आर. बी.टी.एस. होम्योपैथिक कॉलेज के पूर्व प्राचार्य डॉ. आर. डी. झा ने दीप प्रज्वलित करके किया। कार्यक्रम में उच्च रक्त चाप एवं उसके नियण्त्रण पर डॉ. बी.बी. ठाकुर, डॉ. के.सी. सिन्हा, डॉ. के.के.सी. पात्रा एवं डॉ. दयाशंकर सिंह ने अपना मूल्यावान विचार रखा।

इस समारोह में बोलते हुए मेडिकल सर्विस सेण्टर के केन्द्रीय कमेटी सदस्य डॉ. तिमिर कांति दास ने डॉ. हैनिमैन के जीवन संघर्ष की चर्चा करते हुए कहा कि जिस तरह से हैनीमैन ने अपना सम्पूर्ण जीवन आम लोगों को रोग से मुक्ति दिलाने के लिए समर्पित किया उसी तरह उनके आदर्शों को लेकर हमें भी जन-जन तक स्वास्थ्य को पहुँचाने का संकल्प लेना होगा। साथ ही स्वास्थ्य बजट में पर्याप्त राशि खर्च रकने हेतु आन्दोलन के माध्यम से सरकार पर दबाव बनाना होगा ताकि जन सुलभ होम्योपैथिक का विकास हो सके।

कार्यक्रम का संचालन मेडिकल सर्विस सेण्टर के मुजफ्फरपुर चैप्टर के प्रभारी डॉ. दयाशंकर ने किया। मेडिकल सर्विस सेण्टर के डॉ. पी.सी. सिंह, डॉ. अरविन्द कुमार, डॉ. नीलू विश्वकर्मा, डॉ. जायसवाल एवं डॉ. के.के. मल्लिक ने अपना विचार रखा।

अश्लीलता और शराब के प्रसार के खिलाफ आन्दोलन

आरोन (म.प्र.): क्रान्तिकारी पार्टी एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) के कार्यकर्ताओं द्वारा पूरे देश भर में अश्लीलता, अपसंस्कृति, नशाखोरी के खिलाफ आन्दोलन चलाया जा रहा है। उसी के क्रम में आरोन में जनता का आक्रोश एक प्रदर्शन के रूप में उभरकर आया। प्रदर्शन को माधवी जैन ने सम्बोधित किया। साथी जितेन्द्र ने कहा कि सरकार के द्वारा बेटी बचाओ जैसे नारे तो दिए जा रहे हैं लेकिन उन्हें साकार नहीं किया जा रहा है। मुख्य वक्ता मनीष श्रीवास्तव द्वारा कहा गया की आज समाज में जो घटनाएं हो रही हैं उनके पीछे सबसे बड़ा कारण है टीवी चैनल के माध्यमों से अश्लीलता परोसना, शराब, स्मैक जैसे कारोबार को बढ़ावा दिया जाना।

वरिष्ठ साथी का देहान्त

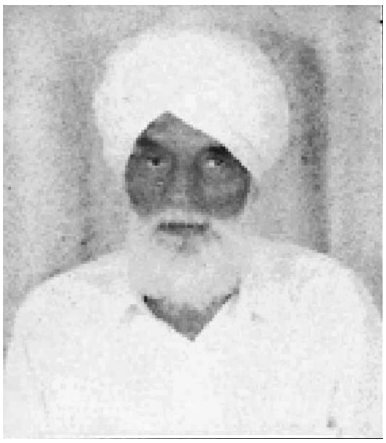

कॉमरेड चानन सिंह का 11 मई 2013 को कैथल जिला के गांव चन्दलाना में देहान्त हो गया। उनकी आयु 96 वर्ष की थी। वे 1984 में पार्टी के सम्पर्क में आए। पार्टी ने उनको ऑल इण्डिया कृषक खेत मजदूर संगठन बनाने की जिम्मेदारी दी थी। संगठन बनाने में उनकी लगन, निष्ठा को देखते हुए 1988 में प्रथम पार्टी कांग्रेस से उनको पार्टी की आवेदक सदस्यता दी गई। उनकी जिम्मेदारी की भावना को देखते हुए 1991 में पार्टी का सदस्य बनाया गया। लगभग 10 वर्षों में काफी वृद्धावस्था, घुटनों का दर्द, कानों का बहरापन होने से वे ज्यादा जनता में नहीं जा सके। इसके बावजूद भी वे पार्टी फंड में योगदान करते रहे तथा आखिरी समय तक भी पार्टी साहित्य का अध्ययन लगन से करते रहे। 20 मई को उनके निवास स्थान पर ग्राम निवासी व रिश्तेदारों द्वारा आयोजित शोक सभा में पार्टी के कैथल जिला सचिव कॉमरेड रोशन लाल ने उनके क्रांतिकारी जीवन के पहलुओं पर अपना व्याख्यान देते हुए उनको क्रांतिकारी श्रद्धांजली दी।

ऑल इण्डिया कृषक खेत मजदूर संगठन के जिला अध्यक्ष कॉमरेड बाबू राम सहित सभा में मौजूद सभी साथियों ने कॉमरेड चानन सिंह के फोटो पर पुष्प अर्पित कर श्रद्धांजली दी।

कॉमरेड चानन सिंह लाल सलाम!

बिजली के निजीकरण के खिलाफ सागर (म.प्र.) में प्रदर्शन

बिजली के निजीकरण के विरोध में एवं एस्सेल निजी कम्पनी की फ्रेंचाइजी सागर नगर से रद्द करने की मांग को लेकर पॉवर हाउस के पास तीन मढ़िया पर सोशलिस्ट यूनिटी सेण्टर ऑफ इण्डिया (सी) की सागर इकाई के तत्वावधान में 12 मई 2013 को प्रदर्शन किया गया।

धरने को संबोधित करते हुए पार्टी के जिला सचिव कॉ. रामावतार शर्मा ने कहा कि बिजली आधुनिक जीवन की सबसे महत्वपूर्ण आवश्यकता है। इसके बगैर हम आज प्रगति व उन्नति के पायदान पर एक कदम भी आगे नहीं बढ़ सकते हैं। इसलिए देश की आजादी के दौरान ब्रिटिश साम्राज्यवादियों द्वारा मुनाफा बटोरने के लिए गठित कम्पनियों को हटाकर पूरे देश में बिजली बोर्डों का गठन किया गया था ताकि बिजली न केवल सर्वसुलभ हो बल्कि इसके उत्पादन व वितरण से हजारों लोगों को रोजगार भी दिया जा सके। इसलिए इसे सरकार के जनकल्याणकारी कार्यों की सूची में सबसे ऊपर रखा गया था।

लेकिन आज हम बड़े दुख के साथ महसूस कर रहे हैं कि जैसे-जैसे आजादी के दिन आगे बढ़ रहे हैं; वैसे वैसे विभिन्न सरकारें चाह वे कांग्रेस की हों या भाजपा या किसी क्षेत्रीय पार्टी की, सभी बिजली बोर्डों को विखण्डित कर बिजली का निजीकरण करते हुए इसे निजी कम्पनियों के हाथों में सौंप रही हैं। इससे वे न केवल मुनाफे का अंबार लगा रही हैं बल्कि इन कम्पनियों में कार्यरत कर्मचारियों का निर्मम शोषण भी कर रही हैं।

सागर शहर इस दुर्दशा का जीता जागता उदाहरण है, मध्य प्रदेश में दिग्विजय सिंह की कांग्रेस सरकार ने बिजली बोर्ड को विखण्डत किया था। आज शिवराज सिंह की भाजपा सरकार भी बिजली के इस निजीकरण को आगे बढ़ा रही है। सागर शहर में निजी कम्पनी एस्सेल को करोड़ों रुपए मुनाफा बटोरने की खुली छूट दे दी गई है। भाजपा नेताओं की सांठगांठ से इस कम्पनी को फ्रेंचाइजी दिया गया है। यह कम्पनी आंकलित खपत के नाम पर बिजली बिलों में गड़बड़ी कर रही है। बगैर उपभोक्ताओं की सहमति के चालू मीटरों को तेज घूमने वाले इलैक्ट्रॉनिक मीटरों में तब्दील कर रही है।

धरने को अशोक खुशवाहा, राजू पटेल, गणेश पटेल, संजय तिवारी एवं सोना कुशवाहा ने संबोधित किया। धरने का समापन गीतों व नारों के साथ हुआ।

R.N.I. No.- 43022/85
P.R.No.-DL(C)-01/1123/2012-2014
Posting at IPMBC on 7–8 and 22–23 Fortnightly, Date of Printing :20 May, 2013

पीतल दस्तकारों का संसद पर प्रदर्शन

देश-विदेश के कोने-कोने में लोगों के ड्राइंग रूम की खूबसूरती बढ़ाने वाले ब्रास आर्टवेयर्स व हैण्डीक्राफ्ट्स बनाने वाले पीतल दस्तकारों की जिन्दगी की हकीकत कितनी बदसूरत है इसको देश-दुनिया के बहुत लोग नहीं जानते। सैकड़ों साल से भी ज्यादा समय से पीढ़ी-दर-पीढ़ी इस हुनर को नई बुलन्दियों तक पहुँचाया है। दस्तकारों के इस हुनर की बदौलत कुछ ही सैकड़ों रुपयों के ब्रास आइटम की कीमत लाखों रुपये हो जाती है। इन ब्रास आइटमों के निर्यात से देश-प्रदेश को हजारों करोड़ रुपये की विदेशी मुद्रा मिलती है।

लेकिन अफसोस की बात है कि आजादी के बाद से अनेक दलों की सरकारें आयीं और गयी परन्तु इन दस्तकारों की समस्याओं की तरफ किसी भी सरकार ने कोई कदम नहीं उठाया। सरकार द्वारा दस्तकारों को राहत के नाम पर आर्टीजन क्रेडिट कार्ड के जरिये कर्ज दिया गया। कर्ज की राशि का कोई आधार नहीं अपनाया गया। मनमर्जी से कर्जराशि तय की गयी। कर्ज देने में भी बैंक, हस्तशिल्प विकास विभाग व अधिकारियों ने बिचौलियों के साथ मिल कर कर्ज की राशि का बड़ा भाग डकार लिया। सन् 2010 में मुरादाबाद में आयी भीषण बाढ़ ने दस्तकारों को तबाह कर दिया। नतीजतन ज्यादातर दस्तकार कर्ज के बकायेदार हो गये। उनकी माली हालत बहुत खराब है और वे कर्ज चुकाने की स्थिति में नहीं है। कर्ज वसूली के नाम पर उनका उत्पीड़न किया जा सकता है। पीतल दस्तकाल इस उत्पीड़न के खिलाफ संघर्ष की राह पर हैं। मार्च में उन्होंने जिला अधिकारी के कार्यालय के समक्ष हड़ताल की।

अब पीतल दस्तकार अपनी इन्हीं सब समस्याओं को लेकर 7 मई को संसद पर प्रदर्शन करने, धरना देने को मजबूर हुए हैं। इस धरने-प्रदर्शन के जरिये माननीय प्रधान मंत्री भारत सरकार एवं माननीय कपड़ा मंत्री को ज्ञापन दिये गये। यूनियन ने माँग की कि कर्जजाल में फंसे पीतल दस्तकारों के कर्ज माफ कर उन्हें ऐमुश्त राहत पैकेज दिया जाये, मुरादाबाद में पीतल दस्तकारों के विकास के नाम पर शुरू की गई कलस्टर योजना के तहत सरकार द्वारा दिये गये करोड़ों रुपये के उपयोग की जाँच करायी जाये, पीतल दस्तकारों को सीधे-सीधे कच्चा माल और बिजली रियायती दर पर दी जाये और पीतल दस्तकारों के लिए वेलफेयर बोर्ड बनाया जाये।

धरना-प्रदर्शन में मुरादाबाद से भारी संख्या में आये पीतल दस्तकारों को ऑल इण्डिया यूटीयूसी के सचिवमण्डल सदस्यों कॉमरेड अचिंत्य सिन्हा व कॉमरेड आर के शर्मा, एसयूसीआई(कम्युनिस्ट) के सांसद डॉ. तरुण मण्डल के अलावा, पीतल मजदूर यूनियन के अध्यक्ष मौ. इस्लाम, सचिव सुरेशपाल सिंह, नसीम अंसारी, इसरार अहमद, ताहिर हुसैन, मौ. रईस, मौ. हारून, मौ. इरशाद आदि ने संबोधित किया।

तुर्की में साम्राज्यवाद-विरोधी सभा में कॉमरेड माणिक मुखर्जी

सभा को सम्बोधित करते हुए कॉमरेड माणिक मुखजी

देश-देश में साम्राज्यवाद, खासकर अमेरिकी साम्राज्यवाद के हमले भयावह खतरे के रूप में दिखाई दे रहे हैं। एक समय समाजवादी खेमा साम्राज्यवादी हमलों के सामने बाधा के तौर पर काम करता था। लेकिन इस खेमे के ढह जाने के बाद साम्राज्यवाद आज हमले करने में बेलगाम हो गया है। इस पृष्ठभूमि में दुनिया में साम्राज्यवाद-विरोधी आन्दोलन गठित करने के मकसद से दुनिया के जनतांत्रिक शान्तिकामी लोगों को एकजुट करने की कोशिश शुरू हुई। इस कोशिश की प्रगति के सिलसिले में गत 14 से 19 अप्रैल तक तुर्की की राजधानी इस्ताम्बुल में आयोजित हुई यह साम्राज्यवाद-विरोधी सभा।

आयोजक थी तुर्की की पिपल्स पार्टी। यह संगठन तुर्की के पूँजीवादी शासन और साम्राज्वाद के खिलाफ आन्दोलन जारी रखे हुए है। सभा में आमंत्रितों में से मौजूद थे आयरलैण्ड, पिलीपीन्स, भारत, जर्मनी, फिलस्तीन, बांग्लादेश, फ्रांस, होण्डुरस, लेबनान, वेनेजुएला, इराक, सेनेगल, बुलगारिया, ग्रीस, नेपाल आदि देशों के कम्युनिस्ट और जुझारू संगठनों के प्रतिनिधि।

भारत से मौजूद थे एसयूसीआई(कम्युनिस्ट) के पोलिट ब्यूरो सदस्य कॉमरेड माणिक मुखर्जी।

विचारणीय विषय थे (1) साम्राज्यवादी आक्रमण और प्रतिरोध संघर्ष, (2) साम्राज्यवाद, आर्थिक संकट और और हमारा दृष्टिकोण, (3) कारागार और वैश्वीकरण की नीति, (4) साम्राज्यवाद की भ्रष्टाचारमूलक संस्कृति के खिलाफ संघर्ष, (5) साम्राज्यवाद के खिलाफ युवा आन्दोलन और युवा संगठन गठित करना।

कॉमरेड मणिक मुखर्जी ने संस्कृति पर साम्राज्यवादी हमले के प्रसंग में बात रखी। उन्होंने कहा–साम्राज्यवाद सिर्फ सामरिक, आर्थिक और राजनैतिक तौर पर ही हमला नहीं करता है, बल्कि संस्कृति पर भी हमला करता है। संस्कृति पर यह हमला ही सबसे भयानक है। यह हमला चलाया जाता है बहुत ही सूक्ष्म तौर पर और चुपचाप। यह भीतर से आन्दोलन की शक्ति को मार देता है। आज साम्राज्यवाद लोगों में जिन सब पिछड़ी हुई भावना-धारणाओं का संचार कर रहा है, वे सत्यानुसंधान के क्षेत्र में अड़चन पैदा कर रही हैं। इसके साथ ही ला रहा है विकृत सड़ी-गली संस्कृति और घोर व्यक्तिवाद व समाजविमुख मानसिकता। इन्सान को बना डाल रहा है हैवान, व्यक्तिकेन्द्रित और मशीन की माफिक, जिसकी समाज के प्रति कोई आवेग-अनुभूति नहीं। क्रान्तिकारियों का आवश्यक काम है इसके खिलाफ उन्नत संस्कृति निर्मित करना जो अवश्य ही पूँजीवाद-विरोधी समाजवादी क्रान्ति की परिपूरक होगी।

कॉमरेड माणिक मुखर्जी ने कहा कि सर्वहारा संस्कृति का जन्म होता है सही क्रान्तिकारी आदर्श को आधार करके वर्ग सचेत मजदूरों के संघर्ष से। यह संस्कृति विकसित होती है बुर्जुआ मानवतावादी मूल्यबोधों को निश्शेषित करने के रास्ते। क्रान्तिकारियों का आवश्यक काम है जनता को सर्वहारा संस्कृति के उन्नत मूल्यबोधों और नैतिकता से उद्बुद्ध कर देना, कला, साहित्य, संगीत, नाटक आदि के जरिये यह संस्कृति फैला देना।

दिल्ली विश्वविद्यालय में मनाई गई आइन्स्टीन मृत्यु वार्षिकी

महान वैज्ञानिक अल्बर्ट आइन्स्टीन की मृत्यु वार्षिकी के उपलक्ष्य में ब्रेकथ्रू साइन्स सोसायटी की दिल्ली शाखा द्वारा 18 अप्रैल को एक परिचर्चा का आयोजन किया गया। दिल्ली विश्वविद्यालय की आर्ट फैकल्टी के सामने आयोजित इस सभा में 'आइन्स्टीन के जीवन-संघर्ष' पर विभिन्न कॉलेजों व संस्थानों के छात्र-छात्राओं ने वक्तव्य रखे।

सोसायटी के सदस्य रवि कुमार ने परिचर्चा का संचालन किया।

मुख्य वक्ता चंचल घोष ने आइन्स्टीन के जीवन-संघर्ष के विभिन्न पहलू पेश करते हुए दिखाया कि विज्ञान और नैतिकता के अभिन्न मेल से एक विरले चरित्र के इन्सान थे आइन्स्टीन। विज्ञान के छात्रों को आज इस मूल्यबोध को अपनाने की जरूरत है।

सोशलिस्ट यूनिटी सेन्टर ऑफ इण्डिया (कम्युनिस्ट) की ओर से कॉ. गिरिजेश्वर सिंह द्वारा 3ए/38, डब्ल्यू.ई.ए., करोल बाग, नई दिल्ली-5 से संपादित व प्रकाशित तथा परम्परा प्रिंटिंग प्रेस, बी-70/83, इण्डस्ट्रियल एरिया, लॉरेंस रोड, दिल्ली-35 से मुद्रित, दूरभाष:011-25726631, Email: sarvaharadrishtikon@gmail.com; sarvaharadrishtikon@yahoo.com